कृतित्व

* 'भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व !'

हिन्दी साहित्य का वह प्रथम प्रभात था, जब भारतेन्दु ने सरस्वती के वीणा में जागरण का स्वर भरा था। नील गगन में सांध्य तारा का, सावस में प्रथम फुहार का, तथा माला में प्रथम मणि का जो रमणीय और महत्वपूर्ण स्थान है वहीं स्थान नवयुग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का है।

देश में दैन्य की प्रचण्ड ज्वाला धू-धू जलती देखकर जब रीतिकालीन कवि किसी अज्ञात नारी (नायिका) को अभिसार का उपदेश सुना रही थी। जब कविता कल्याणी सभा की परी बन रही थी और राधा-कृष्ण की आड़ में कुत्सित प्रेम सत्र-सहस्त्र उद्भावनाएँ की जा रही थी। उसी समय प्रगति की पताका और राष्ट्रीयता का शंख लिए तरुणाई के मस्त कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने हिन्दी साहित्य के प्रांगण में पदार्पण किए और हमें सर्वप्रथम यह राष्ट्र ध्वनि सुनाई दी —

'आवहू रोवहू ~~सब~~ मिलके सब भारत भाई
हा-हा भारत दुर्दशा न अब देखीजाई'

भारतेन्दु कलयुग के कन्हैया थे। लम्बा कद, इकहरा बदन, न अत्यंत कृश, न मोटा ही, आँखें कुछ मोटी, नाक सुडौल, कान कुछ बड़े जिसपर घुँघराले बालों की लटें बलखाती थी, सुन्दर (उन्नत) ललाट, जो इनके भाग्य का ~~द्योतक~~ द्योतक था। दूर से इनकी कविता सुनकर लोग आकृष्ट होते थे और समीप आ श्याम-सुंदर घुँघराले बालों वाली मधुर मुर्ति देखकर बलिहारी होते थे।

बलराम कुमार

थे सुकवि थे, सुलेखक थे, नाटककार थे, नट थे, समाज सुधारक थे, देश भक्त थे, मौलिक कलाकार थे। और क्या नहीं थे? इनकी प्रतिभा इतनी प्रबल और प्रखर थी कि ये अंग्रेजी लिखने वालों को भी पीछे छोड़ देते थे। इनकी आसुकवित्व इतनी प्रबल थी कि वह 'अंधेर नगरी' २८ ही दिन में लिख डाली और विजय वैजंती" की रचना तो सभा होने के कुछ देर बाद ही लिख डाली। इनकी प्रतिभा देखकर जब पंडित रघुनाथ ने इन्हें "भारतेन्दु" की उपमा से सारसुधानिधि (विभूषित करने के लिए) पत्र में प्रस्ताव दिया था और सभी ने मुक्त कंठों से समर्थन किया था, तभी से ये भारतेन्दु कहलाने लगे।

तरुणाई के इस मस्ताने कवि पर सरकार की वक्र दृष्टि तो थी ही इधर स्वजनों की उपेक्षा, उदासीनता और कृतघ्नता ने इनके हृदय को और भी जर्जर बना दिया। फलतः 6 जनवरी 1885 ई० को पौने दस बजे रात में भारत का यह चन्द्र सदा के लिए अस्त हो गया। हम इनके चरणों में और भी निवेदित हो लेना चाहते थे। पैंतीस वर्ष की अल्प आयु में अगर कालराहू ने इन्हें असमय ही ग्रस्त कर लिया फिर भी हमारी झोपड़ियों में इनकी धवल ज्योत्सना आलोक और अमृत बिखेर रही है। तभी तो कहा जाता है—

कुमार कुमार

• जंजीरों से जकड़े देश को राह दिखाई थी तूने
जो सोने काल भी बुझा सके वो समा जलाई थी तूने
घनघोर तिमिर के आंगन में तूने बीज उगा के बोया

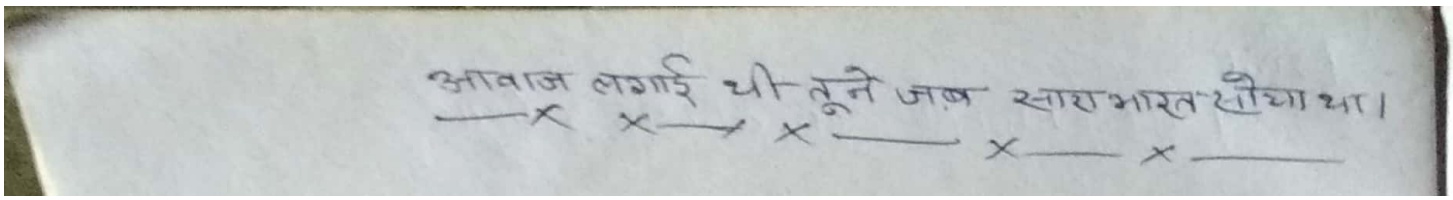

Scanned with CamScanner